वैयक्तिक अध्ययन
अनुसंधान प्रायोजना प्रतिवेदन
सत्र 2021–22

प्रस्तुतकर्ता

आई.एफ.आई.सी. प्रभाग

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट)

चूरू

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद् , उदयपुर

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) चूरू

वैयक्तिक अध्ययन

अनुसंधान प्रायोजन प्रतिवेदन

सा विद्या या विमुक्तये

प्रकाशन

सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षेत्रीय अन्तः क्रियाएं नवाचार एवं समन्वय प्रभाग–3

आई.एफ.आई.सी., प्रभाग, डाईट, चूरू (राज.)

2021–2022

वैयक्तिक अध्ययन वार्षिक पत्रिका
मुख्य संरक्षक

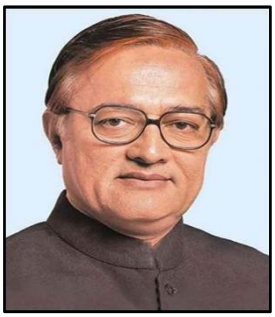

माननीय श्री बी.डी. कल्ला
केबिनेट मंत्री
प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान सरकार, जयपुर

माननीय श्रीमती जाहीदा खान
राज्य मंत्री
प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान सरकार, जयपुर

संरक्षक		
श्रीमती अपर्णा अरोरा (I.A.S.) प्रमुख शासन सचिव स्कूल शिक्षा, राजस्थान शिक्षा जयपुर	श्री कानाराम सिरवी I.A.S. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर	सुश्री प्रियंका जोधावत RAS निदेशक राज.राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर
संयोजक श्री पितराम सिंह काला संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, चूरू		
संयोजक श्री संतोष महर्षि मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी प्रा.शि. चूरू	संयोजक श्री गोविन्द सिंह राठौड़ प्राचार्य जि.शि.प्र. संस्थान (डाईट), चूरू	संयोजक निसार अहमद जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा, चूरू
सह संयोजक श्री सन्तकुमार दहिया प्रभागाध्यक्ष आई.एफ.आई.सी. प्रभाग	सह संयोजक श्रीमती चन्द्रकला खीचड़, प्रभारी आई.एफ.आई.सी. प्रभाग	सह संयोजक श्री अमित ढ़ाका प्रभारी आई.एफ.आई.सी. प्रभाग

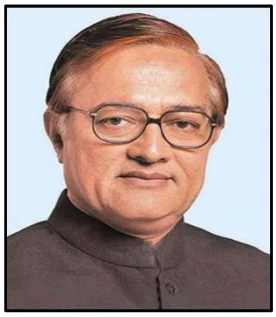

आमुख

शिक्षामंत्री की कलम से.....

डाईट चूरू की वैयक्तिक अध्ययन शोध पत्रिका का अंक 2021–22 में सम्पादित किया गया।वैयक्तिक अध्ययन शोधकी टीम को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ। जिनके अथक प्रयास से चूरू जिले में ही नहीं, अपितु शोध के क्षेत्र में राज्यभर में पहचान स्थापित होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि शोध निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होगा।

सद्भावना सहित।

माननीय श्री बी.डी. कल्ला
केबिनेट मंत्री
प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान सरकार, जयपुर

आमुख

शिक्षा राज्यमंत्री की कलम से.....

डाईट चूरू की वैयक्तिक अध्ययन शोध पत्रिका का अंक 2021–22 में सम्पादित किया गया।वैयक्तिक अध्ययन शोधकी टीम को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ। जिनके अथक प्रयास से चूरू जिले में ही नहीं, अपितु शोध के क्षेत्र में राज्यभर में पहचान स्थापित होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि शोध निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होगा।

सद्भावना सहित।

माननीय श्रीमती जाहीदा खान
राज्य मंत्री
प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान सरकार, जयपुर

आमुख

प्रमुख शासन सचिव की कलम से.....

डाईट चूरू की वैयक्तिक अध्ययन शोध पत्रिकाके लिए शुभकामनाएं देती हूँ। हर वर्ष की भांति इस वर्षभी डाईट चूरू द्वारा सत्र 2021–22 में सम्पादित किया गया है।वैयक्तिक अध्ययन शोध निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को प्रोत्साहन प्रदान करेंगा। तथा शोध निष्कर्ष शिक्षा में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होंगा।

सद्भावना सहित।

श्रीमती अपर्णा अरोड़ा I.A.S.
प्रमुख शासन सचिव
स्कूल शिक्षा, राजस्थान शिक्षा जयपुर

आमुख

निदेशक की कलम से.....

डाईट चूरू कीवैयक्तिक अध्ययनशोध पत्रिकाके लिए शुभकामनाएं देता हूँ। हर वर्ष की भांति इस वर्षभी डाईट चूरू द्वारा सत्र 2021–22 में सम्पादित किया गया है।वैयक्तिक अध्ययन शोध निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को प्रोत्साहन प्रदान करेंगा। तथा शोध निष्कर्ष शिक्षा में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होंगा।

सद्भावना सहित।

श्री कानाराम सिरवी I.A.S.
निदेशक माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

आमुख

निदेशक की कलम से.....

डाईट चूरू की वैयक्तिक अध्ययनशोध पत्रिकाके लिए शुभकामनाएं देती हूँ। हर वर्ष की भांति इस वर्षभी डाईट चूरू द्वारा सत्र 2021–22 में सम्पादित किया गया है।वैयक्तिक अध्ययन शोध निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों को प्रोत्साहन प्रदान करेंगा। तथा शोध निष्कर्ष शिक्षा में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होंगा।

सद्भावना सहित।

सुश्री प्रियंका जोधावत RAS

निदेशक

राज.राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

आमुख

प्राचार्य की कलम से.....

डाईट चूरू की वैयक्तिक अध्ययन शोध पत्रिका का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह अंक डाईट चूरू द्वारा सत्र 2021–22 में सम्पादित किया गया।

मैं अनुसंधान विशेषज्ञों, आई.एफ.आई.सी. प्रभागाध्यक्ष एवं प्रभाग प्रभारी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से चूरू जिले में ही नहीं अपितु शोध के क्षेत्र में राज्यभर में पहचान स्थापित होगी।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि शोध निष्कर्ष शिक्षा में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होगा। शिक्षाविद् शिक्षा जगत् के अधिकारी, शिक्षक सहयोगी समय–समय पर अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराते रहेंगें।

सद्भावना सहित।

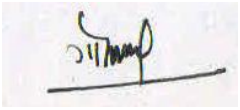

(गोविन्द सिंह राठौड़)

प्राचार्य

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

(डाईट) चूरू

आमुख

प्रभागाध्यक्ष आई.एफ.आई.सी. की कलम से.....

डाईट चूरू की वैयक्तिक अध्ययन शोध पत्रिका का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

मैं अनुसंधान विशेषज्ञों, शोध शिक्षा प्रभाग प्रभारी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से चूरू जिले में ही नहीं अपितु शोध के क्षेत्र में राज्यभर में पहचान स्थापित होगी।

शोध निष्कर्ष शिक्षा में गुणात्मकवृद्धि व शिक्षकों के ज्ञान अभिवर्द्धन में सहायक होगा। शिक्षाविद् शिक्षा जगत् के अधिकारी, शिक्षक सहयोगी समय–समय पर अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराते रहेंगें। वैयक्तिक अध्ययन शोध प्रकाशन में श्री जयप्रकाश अ., श्री विजय कुमार अ., श्री जगवीर सिंह पूनियां अ. व जयचन्द राबिया अ. का प्रकाशन में अतुलनीय योगदान रहा है।

सद्भावना सहित।

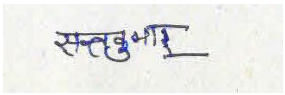

(सन्त कुमार दहिया व्या.)

प्रभागाध्यक्ष आई.एफ.आई.सी.

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

(डाईट) चूरू

अकादमिक अनुभाग

- श्री गोविन्द सिंह राठौड़, प्राचार्य, डाईट, चूरू
- श्री सन्त कुमार दहिया, व्या., आई.एफ.आई.सी. प्रभागाध्यक्ष, डाईट, चूरू
- श्रीमती चन्द्रकला, व्या, आई.एफ.आई.सी. प्रभाग प्रभारी, डाईट, चूरू
- श्री अमित ढाका, व्या.,आई.एफ.आई.सी. प्रभाग प्रभारी, डाईट, चूरू
- श्रीमती सुमेर सिंह सिरोवा, व.व्या. प्रभागाध्यक्ष पी.एस.टी.ई., डाईट, चूरू
- श्री पीयूष कुमार शर्मा व्या. पी.एस.टी.ई., डाईट, चूरू
- श्री बजरंग लाल मीणा व्या. पी.एस.टी.ई., डाईट, चूरू
- डॉ. सत्यनारायण स्वामी व.व्या. प्रभागाध्यक्ष डी.आर.यू., 5वीं बोर्ड, डाईट, चूरू
- श्रीमती प्रसन्ना मीणा, व्या., प्रभागाध्यक्ष डी.आर.यू., डाईट, चूरू
- श्रीमती सरिता दनेवा व्या. पी.एस.टी.ई., डाईट, चूरू
- श्री भीष्म प्रकाश सहारण व्या., डाईट, चूरू
- श्री ओमप्रकाश कस्वां व्या., पी.एस.टी.ई., डाईट चूरू
- श्रीमती विनोद सहारण व्या., पी.एस.टी.ई., डाईट चूरू
- श्री संदीप महरोलिया व्या., पी.एस.टी.ई., डाईट चूरू
- श्री अशोक कुमार पारीक, व्या. प्रभागाध्यक्ष पी.एण्ड एम. डाईट, चूरू
- श्रीमती उमा सारस्वत, व्या., प्रभागाध्यक्ष, डब्ल्यू.ई., डाईट, चूरू
- श्रीमती निशा अजमेरा, व.व्या. प्रभागाध्यक्ष, सीएमडीई, डाईट, चूरू
- श्रीमती विजय लक्ष्मी शेखावत व्या. प्रभागाध्यक्ष 8वीं बोर्ड डाईट, चूरू
- श्री सुमेर सिंह पूनिया व्या. प्रभारी 8वी बोर्ड डाईट, चूरू
- श्री शक्तिसिंह राठौड़ व्या. 8वीं बोर्ड, डाईट, चूरू
- श्री नरेन्द्र कुमार सैनी व्या. प्रभारी 5वीं बोर्ड, डाईट, चूरू
- श्री नरेन्द्र कुमार उपाध्याय, व.व्या. प्रभागाध्यक्ष ई.टी. डाईट, चूरू
- श्री हंसराज मीणा व्या. प्रभारी ई.टी., डाईट, चूरू

- डॉ. श्याम सुन्दर कौशिक से.नि. व.व्याख्याता
- श्री कैलाश चन्द दैया व्या. प्रभारी एन.आई.ओ.एस., प्रभाग पी.एस.टी.ई. डाईट, चूरू
- श्री महेन्द्र कुमार शर्मा पुस्तकालय अध्यक्ष डाईट, चूरू
- श्रीमती मंजू मील प्र.शा.स. डाईट, चूरू

प्रशासनिक अनुभाग

- श्री राजेन्द्र कुमार चारण स. लेखाधिकारी ग्रेड–2, डाईट, चूरू
- श्री दिनेश कुमार स्वामी व. सहायक, डाईट, चूरू
- श्री प्रवीण कुमार महिया व.सहायक, डाईट, चूरू
- श्री मातुलाल शर्मा क. सहायक, डाईट, चूरू
- श्री राकेश कुमार मोटसरा क. सहायक, डाईट, चूरू
- सुश्री मनीषा गहनोलिया क.सहायक डाईट, चूरू
- श्री अफजल अली क.स., डाईट, चूरू
- श्री श्यामलाल च.श्रे. कर्म., डाईट, चूरू
- श्री जगदीश प्रसाद राव च.श्रे. कर्म., डाईट, चूरू
- श्री हेमन्त कुमार च.श्रे. कर्म., डाईट, चूरू
- श्री संदीप च.श्रे. कर्म., डाईट, चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) चूरू

सत्र 2021–22

वैयक्तिक अध्ययन विवरणिका

क्र.सं.	वैयक्तिक अध्ययन शीर्षक	वैयक्तिक अध्ययनकर्ता
1	विशेष बालक का अध्ययन।	श्री नरेन्द्र कुमार उपाध्याय वरिष्ठ व्याख्याता (समकक्ष–प्रधानाचार्य) डाइट, चूरू
2	उच्च उपलब्धि शैक्षिक स्तर विद्यार्थियों की वस्तु स्थिति का अध्ययन।	श्रीमती निशा अजमेरा, व.व्या., डाइट,चूरू। श्रीमती कान्ता शर्मा, व.अध्या., रा.मा.वि., खींवणसर, सरदारशहर, चूरू। श्री नरेन्द्र कुमार सैनी, व्या., डाइट, चूरू।
3	बालक की सृजनात्मक प्रवृति का अध्ययन।	श्रीमती उमा सारस्वत, व्याख्याता, डाइट, चूरू। डॉ. निर्मल कुमार शर्मा, रा.उ.मा.वि., सवाईबड़ी, सरदारशहर, चूरू।
4	विद्यार्थियों में भाषा क्षमता स्तर की वस्तु स्थिति का अध्ययन करना।	श्रीमती प्रसन्ना मीणा, व्याख्याता, डाइट, चूरू। श्रीमती सरोज बेनिवाल, अध्यापक, रा.बा.उ. प्रा.विद्यालय, हड़ियाल।
5	प्रतिभाशाली बालिका का अनवरत अध्ययन में उत्पन्न व्ययधान :–एक अध्ययन।	अशोक कुमार पारीक, व्याख्याता, डाइट, चूरू। प्रभा पारीक, व्या.,रा.उ.मा.वि.मेलूसर, चूरू।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) चूरू

सत्र 2021–22

वैयक्तिक अध्ययन

अनुसंधान कर्ता :–
श्री नरेन्द्र कुमार उपाध्याय
वरिष्ठ व्याख्याता (समकक्ष प्राधानाचार्य, राउमावि)
ईटी प्रभाग, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) ,चूरू
शीर्षक :– ''विशेष बालक का अध्ययन।''
बालक /बालिका का नाम :–समीर

आयु :–13 वर्ष

विद्यालय का नाम :–श्री दुर्गादत भक्कड़ रा. उ. प्रा. वि. इन्दिरा कॉलोनी

पिता /अभिभावक का नाम :–श्री मगतु खां

स्थाई पताः–वार्ड न. –2 ,माता मठिड के पास, सादुलपुर

कक्षा :–8

समस्या का वर्णन :– विपरित या प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद शांत चित व हंसी खुशी से आगे बढने वाला CWSNछात्र पर वैयक्तिक अध्ययन करने का निर्णय लिया ताकि भविष्य में यह अध्ययन सभी का मार्गदर्शन बने।

समस्या की जानकारी देने वाले का नाम एवं पताः– विद्यालय अवलोकन/ सम्बलन के दौरान श्री दुर्गादत भक्कड़ रा. उ. प्रा. वि. के प्रधानाध्यापक श्री चक्रधर शर्मा ने समस्या की जानकारी दी।

समस्या प्रारंभ होने का अनुमानित समयः– दो से तीन माह।

पारिवारिक विवरण :–

पिता या अभिभावक का व्यवसायः– मजदूरी
माता का व्यवसायः–समारोह/विवाह आदि होने पर घर–2 जाकर बर्तन सफाई का कार्य
पिता या अभिभावक की शिक्षाः–निरक्षर
माता की शिक्षाः– निरक्षर
पिता या अभिभावक का स्वास्थ्यः–अच्छा
माता का स्वास्थ्यः–अच्छा
पिता या अभिभावक की आयुः– 45 वर्ष
माता की आयु:–40 वर्ष
परिवार की अनुमानित मासिक आय :–4000
क्या परिवार की कुल आय पर्याप्त है? नहीं
परिवार के सदस्यों की संख्याः– 4 भाई –0 बहन –1 अन्य –.
भाई–बहनों की संख्या सही के चिन्ह से दर्शायें और संबंधित बालक/बालिका के चिन्ह को गोले से घेर दें।

क्र.सं.	1	2	3	4	5	6
बालक	1	–	–	–	–	–
बालिका	–	1	–	–	–	–
आयु	13 वर्ष	8 वर्ष	–	–	–	–

बालक/बालिका से संबंधित परिवार के अन्य सदस्य और उनकी आयु–

1 पिता– आयु– 40 वर्ष
2 माता– आयु – 35 वर्ष
3 बहन – आयु –8 वर्ष

विद्यालयीन विवरणः–

बालक /बालिका की शैक्षिक प्रगति पिछले दो वर्षों का परिणामः–
परीक्षा वर्षः–2019–20 विषय और प्रतिशत अंकः–6 से कक्षा 7 में क्रमोन्नत (कोविड–19)
परीक्षा वर्षः– 2020–21 विषय और प्रतिशत अंक– 7 से कक्षा 8 में क्रमोन्नत (कोविड–19)
बालक/बालिका के रूचिकर विषयः– हिन्दी
बालक/बालिका के अरूचिकर विषयः–अंग्रेजी
अरूचिकर होने का कारणः–meaning याद नहीं होता है।
बालक / बालिका द्वारा भाग लेने वाले पाठ्य सहगामी क्रियाओं के नामः– क्रिकेट
बालक/बालिका से अध्यापकों से संबंधः– संतोषजनक (ठीक–ठाक)
बालक/ बालिका का अपने सहपाठियों से संबंधः– अच्छे
विद्यालय का स्तर :–उच्च प्रा. विद्यालय
बालक/बालिका के अवकाश के समय मुख्य मनोरंजन के साधन क्या हैः– बहन के साथ खेलना
बालक/बालिका की भावी योजनाओं क्या हैः– बड़ा होकर सरकारी नौकरी करना चाहता है।

बालक/बालिका के अन्य व्यक्तिगत गुणों का वर्णनः–

1 जीविकोपार्जन में माता का सहयोग।
2 आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण मजबूरी करना।
3 दिव्यांग होने के कारण किसी के द्वारा दिव्यांग कहने से नाराज हो जाना।
4 मन लगाकर कार्य का न करना।

व्यवहार संबंधी जानकारीः–

प्रसन्नचित,शांत, उदास, साहसी, भयभीत,संवेदनशील,वास्तविकता समझने वाला, आज्ञाकारी, अनुशासनप्रिय, सहयोगी, स्वार्थी।

क्या बालक/बालिका को अपने अभिभावकों ने पूर्ण स्नेह दिया है?–माता का स्नेह मिला लेकिन पिता से नहीं।
क्या बालक/बालिका से उसके भाई–बहन स्नेह करते है?– हां
क्या बालक–बालिका के मित्र उसे चाहते है?–हां
क्या विद्यालय में बालक/बालिका को सम्मान मिलता है?– हां
क्या बालक/बालिका को अभिभावकों और अध्यापकों से प्रोत्साहन मिलता है?–हां
क्या बालक/बालिका को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की सुविधा है?–हां
क्या बालक/बालिका के मन में भय जगाने के लिए दण्ड दिया जाता है?–हां

क्या बालक/बालिका की शारिरिक या बौद्धिक न्यूनता की तुलना उसके भाई–बहनों से की जाती है?– हां
क्या बालक/बालिका का स्वास्थ्य अच्छा है?–हां

बालक/बालिका के गुणों का मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर मूल्यांकनः–

योग्यता मूल्यांकन	मनोवैज्ञानिक परीक्षण का नाम	परिणाम
बौद्धिक योग्यता	–	–
अभिक्षमता	–	–
अभिरूचि	–	–
व्यक्तिव	Dr.ashok sharma & smt. Meenu agarwal, jaipur	उभयमुखी, महत्वकांक्षी
समायोजन	-	–
अन्य (विद्यार्थी सामाजिक व्यवहार मापनी)	Dr . Ashok sharma,jaipur	समाज में सभी के साथ बहुत अच्छा व्यवहार

बालक/बालिका का अपनी समस्या के प्रति दृष्टिकोणः– बालक की दृष्टि कमजोर है एवं आंख खराब है उसे सहपाठी चिढाते है जिससे वह पढाई में मन नहीं लगा पाता व आर्थिक दृष्टि से कमजोर है पिता शराब आदि का सेवन करता है।

बालक/बालिका अपनी समस्या का मुख्य कारण क्या मानता /मानती है?– बालक अपनी समस्या का मुख्य कारण शारिरिक दिव्यांगता व पिता द्वारा स्नेह नहीं मिलना तथा सहपाठियों द्वारा चिढाना।

बालक/बालिका की समस्या के प्रति अन्य व्यक्तियों का अभिमतः–बालक शान्त चित का है पर दूसरों द्वारा उकसाने कुछ बुरा कहने पर उतेजित हो जाता है। और वह जो कुछ हाथ मे आ जाता है उसी से वह प्रहार कर देता है।

पिता का अभिमतः– बालक के पिता ने बताया वह पढे या ना पढे मुझे कोई वास्ता नहीं है।

माता का अभिमतः– माता ने बताया की यह मेरे काम में हाथ बटाये व साथ में पढे परन्तु यह देर तक सोता है।

अध्यापक का अभिमतः– बालक के अध्यापक श्री चक्रधर शर्मा ने बताया उस बालक की आर्थिक स्थिति व सामाजिक स्थिति बहुत कमजोर है यह शांतचित रहता है पढाई में ठीक ठाक है।

अन्य संबंधित व्यक्तियों का अभिमतः– बालक के पडोसियों ने बताया कि वैसे तो शांत स्वभाव का है पढाई कम करता है बाहर घूमता रहता है बच्चे चिढाते है तो उसे पीट भी देता है।

बालक/बालिका की समस्या का वर्णन एवं कारणों पर परामर्शक का अभिमतः– आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है और किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता प्राप्त नहीं है बालक को दिव्यांगता का प्रमाण पत्र नहीं मिल रहा है जबकि विद्यालय में प्रवेश cwsnमें है। अगर उसे दिव्यांग्ता का प्रमाण पत्र मिल जाये व सरकारी योजनाओं में सम्मिलित किया जाये तो वह जीवन में आगे बढ सकता है।

समस्या निवारण हेतु परामर्शः–छोटी–छोटी बातों में उग्रन होकर शान्त रहा करो। पढाई मन लगाकर करो और अपनी माता के कार्यों में भी हाथ बंटाया करो।

अनुवर्ती अध्ययन का परिणामः– ऐसे विद्यार्थी जो cwsnमें आते है (बॉर्डरलाइन पर है)वैसे विद्यार्थियों पर यह अध्ययन काम आ सकता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) चूरू

सत्र 2021–22

वैयक्तिक अध्ययन

1. शीर्षकः– ''उच्च उपलब्धि शैक्षिक स्तर विद्यार्थियों की वस्तु स्थिति का अध्ययन।''

2. अन्वेषण कर्ताः–CMDE प्रभाग।

- निशा अजमेरा व.व्या.प्रभागाध्यक्ष , पाठ्यक्रम सामग्री विकास प्रभाग, डाइट, चूरू।
- कान्ता शर्मा, व.अ,.रा.मा.वि.खीवणसर, सरदारशहर।
- नरेन्द्र कुमार सैनी, व्याख्याता, डाइट, चूरू।

3. प्रस्तावनाः– विद्यालय में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर समान नहीं होता है। प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता पृथक–पृथक होती है। प्रत्येक विद्यार्थी की विशेषता पृथक–2 होती है उक्त स्थितियां राष्ट्रीय शिक्षा नीति व शिक्षा विद मानते है। मुझे विद्यालय अवलोकन एवं अध्यापकों में परस्पर विचार विनिमय से यह स्पष्ट है कि विद्यालय में कुछ विद्यार्थी किसी को मित्र नहीं बनाना चाहते है। परन्तु इन्हें अधिकतर अपना साथी बनाना चाहते है विपरित कुछ ऐसे है जो मित्र बनाना चाहते है परन्तु इन्हें मित्र कोई बनाता नहीं है उक्त दोनों स्तर को यदि साधारण स्थिति में परिवर्तन नहीं किया तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया विद्यार्थियों को अधिगम क्षमता के अभाव की स्थितियां अनुकूल बनाने में असफल रहेगी। ऐसे में सभी के शैक्षिक स्तर प्रोन्नति में बाधक अध्येताओं की पहचान कर उसे भी वस्तु स्थिति का अध्ययन करने की आवश्यकता है यदि हम उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले अध्येता को चिन्हित कर उनके सहपाठी मित्रों के साथ व्यवहार ही वस्तु स्थिति का अध्ययन करने में सफल हो जाते है तब उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन के सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत कर सकते है यदि अपेक्षित सुधार किये जा सकें तो शैक्षिक स्तर प्रोन्नत किए जा सकते है।

4. अध्ययन क्षेत्र :– शैक्षिक।

5. अध्ययन उद्देश्यः–

- उच्च शैक्षिक उपलब्धि स्तर के विद्यार्थियों के सहपाठी संग व्यवहार, मित्रवत सहपाठी व्यवहार की वस्तु स्थिति की जानकारी करेंगे।
- विद्यार्थियों मे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अधिगम परिस्थितियां निर्मित करने की अपेक्षाओं की जानकारी करना।
- कक्षान्तर्गत कक्षा के बाहर उच्चस्तर की शैक्षिक उपलब्धि वाले अध्येताओं से सहपाठी की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए सुझाव।

6. अध्ययनः–उच्च शैक्षिक स्तर के अध्येता परिसीमन, राजकीय विद्यालय सातमील, तारानगर तक सीमित रखा गया है।

7. अध्ययन के लाभः– विद्यालय में यदि कक्षान्तर्गत व्यवहार व बाहर अपेक्षित परिवर्तन तभी सम्भव है जब विपरित स्थितियां चिन्हित किया जाये। उक्त उद्देश्य से अन्वेषण करने का प्रयास किया जायेगा।

- उच्च उपलब्धि शैक्षिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अव्यवहारिक स्थिति को परिमार्जन के लिए सुझाव प्रस्तुत किया जाने का प्रयास किया है।

- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आने वाली समस्या समाधान के लिए मार्ग प्रस्तावित किया जाने का प्रयास किया गया है।
- प्रत्येक विद्यार्थी की अपेक्षाओं की पूर्ती प्रयास का मार्ग प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन विद्या :– विद्यालय अवलोकन के पश्चात यह सुनिश्चित किया गया कि विद्यालय की कक्षा में शैक्षिक स्तर प्रोन्नति में सहपाठी के व्यवहार व्यक्तिगत एवं मैत्रीपूर्ण सहयोगात्मक व्यवहार के उदगम स्त्रोत भी पहचान करें, उसके व्यवहार की वस्तु स्थिति की जानकारी आदि के लिए अध्ययन विद्या अवलोकन, निदानात्मक का प्रयोग किया गया है।

8. प्रयुक्त शोध अन्वेषण कार्य के लिए शोध उपकरण, सांख्यकी उपकरण ,साक्षात्कार, अवलोकनी समाजनीति आदि है तथा सांख्यकी अंकन माध्य, माध्यिका है।

9. दत संकलनः– दत संकलन के लिए सर्व प्रथम समाजनीति प्रक्रिया, उसके पश्चात चिन्हित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर अवलोकन एवं साक्षात्कार अपेक्षित व्यवहार पहचान के लिए किया गया है।

9.1 समाजमीतिः– उच्चतम मित्रता की अपेक्षा व न्यूनतम मित्रता की अपेक्षा वाले विद्यार्थियों की पहचान के लिए प्रत्येक विद्यार्थी से कक्षान्तर्गत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के समय निकट बैठाने या मित्रता का क्रम वरियता अधिगम स्तर प्रोन्नति में सहायक है।

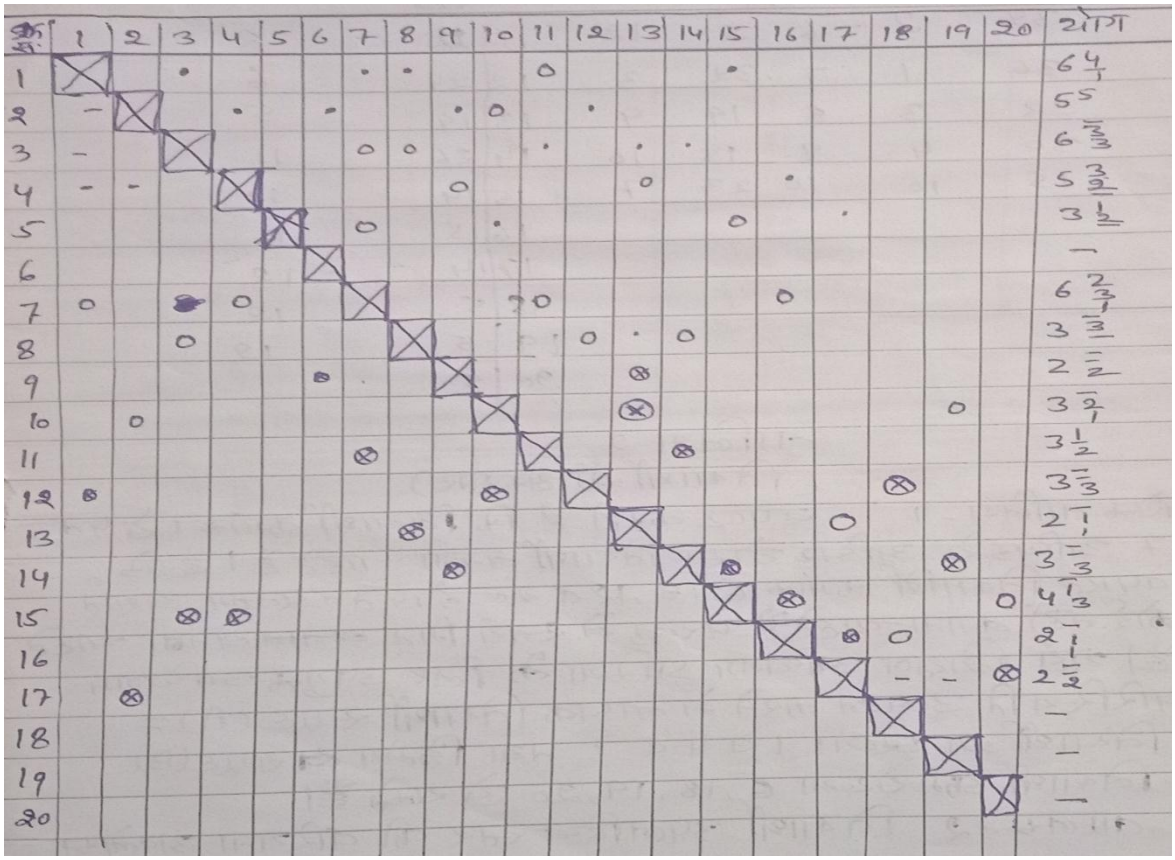

संकेत– दात्र
मेत्री वरीयता क्रम L – 2=0, 3=x
समाजमिती (सहपाठी अन्तः क्रिया वरियता)
तालिका–1

9.2 उपलब्धि स्तर– गृहकार्य नियमितता विद्यालय में नियमित उपस्थिति परख आंकलन आधान पर प्रदत अंको के आधार पर उपलब्धि प्राप्तांक संकलित किये गये। अंको के आधार पर उपलब्धि प्राप्तांक

संकलित किये गये। अंको की प्राप्ति क्रमशः नियमितता, गृहकार्य स्तर के कुल 20 अंक व परख के 30 अंक–

क्र.सं.	प्राप्तांक	वरियता
1	34	2
2	36	1
3	32	3
4	30	4
5	15	10
6	5	12
7	32	3
8	19	9
9	15	10
10	23	7
11	8	22
12	6	24
13	5	19
14	11	26
15	10	14

तालिका–2 विद्यार्थी शैक्षिक स्तर

उपरोक्त तालिका–1 स्पष्ट करती है कि विद्यार्थी क्रमांक 1 से 4 व 7 अधिक से अधिक दोस्त विद्यार्थी बनाना चाहते है। इसके विपरित विद्यार्थी क्रमांक 6,18,12 व 20 दोस्त न्यूनतम अर्थात कोई नहीं बनाना चाहते है परन्तु ये स्वंय मित्र बनना चाहते है। यहां शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए उपयुक्त अधिगम परिस्थिति उत्पन्न करने में बाधक विद्यार्थी समूह A =विद्यार्थी क्रम संख्या 1 से 4 व 7 तथा द्वितीय समूह B =विद्यार्थी क्रम संख्या 6,18,19,20 हो सकते है। तालिका –2 विद्यार्थी उपलब्धि स्तर की वरियता अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थीयों के दो समूह क्रमशः 1,2,3,4व 7 समूह A अधिक शैक्षिक उपलब्धि स्तर विद्यार्थी क्रम संख्या 6,18,19,20 है।

9.3 अधिगम प्रक्रिया एवं सहपाठी अन्तः क्रिया तालिका 1 व 2 से उत्पन्न विद्यार्थी समूह Aव B समाजमिती व शैक्षिक उपलब्धि में समानता है।

शैक्षिक उपलब्धि स्तर व सहपाठी अन्तःक्रिया

तालिका–3

क्र.सं.	छात्र क्र.सं.	उपलब्धि स्तर	व्यवहारिक अन्तःक्रिया
1	1	2	उच्च उपेक्षा अन्य चाहते है स्वयं नहीं
2	2	1	"
3	3	3	"
4	4	4	"
5	7	3	"
6	6	12	कोई अन्तः
7	18	12	क्रिया नहीं चाहता
8	19	12	ये स्वयं चाहते है।
9	20	12	"

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि क्र.सं. 1 से 5 के छात्र समूह A उच्च उपलब्धि स्तर तथा अधिकतर अध्येता सहपाठी इनसे मित्रता चाहता है। परन्तु ये स्वयं मित्रता समूह B के विद्यार्थीयों से नहीं चाहते है।

समूह B के विद्यार्थीयों की उपलब्धि स्तर न्यून है ये अन्य से अन्तः क्रिया की उपेक्षा करते है परन्तु समूह A के विद्यार्थीयों से अन्तः क्रिया की अपेक्षा नहीं के बराबर है। इनसे कोई दोस्ती नहीं करना चाहते है।

10 दत विश्लेषणः– तालिका 1 से 3 व इनका स्पष्टीकरण 9–1 से 9–3 अधोलिखित तथ्य स्पष्ट करते है।

10.1 सहपाठी अन्तःक्रिया विश्लेषण तालिका –1 के आधार पर स्पष्ट करते है कि प्रत्येक कक्षा में दो तरह के विद्यार्थी स्पष्ट हो रहे है। अधिकतर विद्यार्थी सहपाठी अन्तः क्रिया की अपेक्षा करते है अर्थात समूह को अन्तः क्रिया के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है।

समूह Aके विद्यार्थीयों से सहपाठी अन्तःक्रिया प्रोन्नत अपेक्षा समूह है। समूह Bसहपाठी समूह अन्तःक्रिया अपेक्षा समूह है। ये स्वयं मित्रता चाहते है। परन्तु इनसे कोई नहीं।

10.2 निष्कर्षः– यदि हम समूह A व B को क्रमशः सहपाठी अन्तःक्रिया अपेक्षा समूह व सहपाठी अन्तःक्रिया उपेक्षा समूह कह सकते है। यहां सहपाठी अन्तःक्रिया अपेक्षा व उपेक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए अपेक्षित परिस्थितियों में बाधक होती हैं। उक्त निष्कर्ष को सम्बलन तालिका– 3 से निर्मित का अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक स्तर उपलब्धि व सहपाठी अन्तःक्रिया अपेक्षा समूह A समान है। सहपाठी अन्तःक्रिया उपेक्षा समूह व न्यून उपलब्धि समूह एक ही है।

10.3 परिणामः– विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि सहपाठी अन्तःक्रिया उपेक्षा समूह को सबकी अपेक्षा पूर्ण करने के लिए प्रेरित करें तथा सहपाठी अन्तःक्रिया उपेक्षा को अपेक्षा में परिवर्धन करने से सभी विद्यार्थीयों के शैक्षिक उपलब्धि स्तर को उच्च बनाया जा सकता है। सभी के लिए उपयुक्त शिक्षण अधिगम स्थितियां अपेक्षित हो सकती है।

11 सुझावः– विद्यार्थियों के सहपाठी अन्तःक्रिया उपेक्षा को अपेक्षा परिवर्धन करें। सहपाठी की अन्तःक्रिया अपेक्षा को उपलब्धता में परिवर्धित करने के लिए उच्च शैक्षिक उपलब्धि अध्येता में अधोलिखित परिवर्धन करें।

- सहयोग
- सहपाठी की अधिगम समस्या समाधान के लिए प्रेरित करना।
- प्रत्येक विद्यार्थी की स्वयं की विशेषता के आधार क्षमता अनुसार अन्य का सहयोग करें।
- समय पर गृहकार्य करें इसमें आनेवाली बाधाओं का निस्तारण सक्षम सहपाठी करें। इसके लिए प्रेरित करें।

संक्षेपः– उक्त सभी सुझाव यदि विद्यालय में अनुपालना करना चाहते है तो यदि गतिविधि आधारित शिक्षण एवं मूल्यांकन की क्रियान्विति की जाये तो निश्चित पूर्ण की जा सकती है। अन्तःक्रिया उपेक्षा समूह को उनकी विशेषताओं को चिन्हित करके अधिक परिस्थितियों की बाधाओं को दूर किया जा सकता है।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) चूरू

सत्र 2021–22

वैयक्तिक अध्ययन

अनुसंधान कर्ताः–WE प्रभाग–

श्रीमती उमा सारस्वत, व्याख्याता, डाइट, चूरू।
डॉ. निर्मल कुमार शर्मा, रा.उ.मा.वि., सवाईबड़ी, सरदारशहर, चूरू।

शीर्षक :–''बालक की सृजनात्मक प्रवृति का अध्ययन।''

बच्चे का नाम – अनिल नायक

पिता का नाम – श्री जगदीश नायक

माता का नाम – श्रीमती कमला नायक

पता – हरिजन मौहल्ला, गिड़गिचिया,
सरदारशहर, चूरू

विद्यालय – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गिड़गिचिया, सरदारशहर।

कक्षा – 8

समस्या :– बच्चा हर वस्तु को मौका पाकर खोल कर देखता, पुरानी वस्तुओं के संग्रह से नया करता रहता है माता–पिता से अपने आस–पास वस्तुओं के बारे में जानना चाहता है, प्रश्न पूछता है, जिद्दी है, सोचता है, चिंतित रहता है।

परिचयः– अनिल नायक, कक्षा–8 वीं का छात्र है वह रा.उ.मा.वि. गिड़गिचिया में पढता है अनिल के पिता मकान निर्माण कार्य करते है माता जी गृहकार्य और मजदूरी करती है माता–पिता की शैक्षिक योग्यता प्राथमिक स्तर की है दोनों का स्वास्थ्य ठीक/ निरोगी है जगदीश जी की मासिक आय औसतन 3800 से 4200 के बीच/ बराबर रहती है परिवार में 5 सदस्य है कुछ खेती भी है अनिल बच्चों में सबसे बड़ा है लाड़–प्यार पला है छोटे दोनों भाई राजकीय विद्यालय पढते है।

बच्चा अपने छोटे भाईयों को हिन्दी/ अंग्रेजी आदि को पढाता है अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत है अनिल आसन करने में रूचि रखता है जैसे मयूर आसन/शीर्षासन दोनों मुद्रा में हाथों के बल चलने की क्षमता रखता है हलासन, भुंजगासन, पदमासन आदि मुद्रा का प्रदर्शन करता है अपने भाईयों को और स्कूल में कक्षा के सहपाठियों को आसन करना सिखाता है अनिल कक्षा–8 में पढता है उसे हिन्दी/अंग्रेजी /सामाजिक पढना अच्छा लगता है गणित में रूचि कम है अनिल पढाई में B grade है जबकि कक्षा–5 की बोर्ड परीक्षा में अंग्रेजी/ पर्यावरण विषयों –A grade और हिन्दी/ गणित में B grade से उतीर्ण हुआ। पाठ्यक्रम पुस्तकों के साथ अन्य पुस्तक बाल हंस, बाल कविता, कार्टून, बाल कहानियां , नन्दन आदि को पढता है स्वामी विवेकानन्द जी की जीवनी से प्रभावित है उनकी पुस्तकों को पढने में रूचि रखता है कक्षा–6 , कक्षा–7 में कोविड–19 के कारण विभागिय आदेश क्रमोन्न्त हुआ है अनिल विद्यालय के सहपाठी छोटे– बडे विद्यालय के अन्य छात्र /छात्राओं के मधुर सम्बन्ध रखता है उनसे स्नेहपूर्ण व्यवहार करता है अपने कक्षा शिक्षक साथ ही अन्य शिक्षकों के साथ आदर/ सम्मान के साथ स्नेह के साथ मधुर सम्बन्ध रखता है। विद्यालय रिकार्ड प्रशंसनीय पाया।

अनिल विद्यालय के कार्यक्रमों में पूर्ण निष्ठा से भाग लेता है विद्यालय में पूर्ण अनुशासन में रहता है विद्यालय में खेल /पीटी में भाग लेता है अपना प्रदर्शन अच्छा करता है। कक्षा/ विद्यालय को साफ–सुथरा रखता ह। अपने साथियों को भी प्रेरित करता है। अनिल अपने जीवन में मेहनत करके अच्छेमुकाम पर पहुचना चाहता है। वह बड़ा होकर पुलिस/सेना में नौकरी पाना चाहता है। गांव के अन्य युवा बालक जो सेना/पुलिस में भर्ती की तैयारी करते देख अनिल भी दौड़ लगाया करता है अभी से तैयारी कर रहा है।

अनिल घर, परिवार और मौहल्ले के सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेता है। समय पर अपने विचार साझा करता है। अपनी मां के कार्यों में मां का सहयोग करता है। माता–पिता को ज्यादा मेहनत करते देख परेशान होता है। अनिल इतनी मेहनत /परिश्रम करना चाहता है कि अपने माता–पिता को सुख–सुविधा देकर उनको सुख देना चाहता है।

व्यवहार सम्बन्धी जानकारीः– अनिल की प्रवृति शान्त, प्रसन्नचित उदार, साहसी है। अनिल अपने और भाईयों के प्रति संवेदनशील है और वह वास्तविकता को समझने वाला है अपने माता–पिता बडे, बुजुर्गों के साथ ही शिक्षकों का सम्मान करना उनकी आज्ञा का पालन करता है। अनिल अनुशासन प्रिय छात्र है। अपने घर परिवार और विद्यालय में सहयोगी व्यवहार का परिचय देता है। पढाई के साथ अन्य सभी कार्यों को करने में पूर्ण विश्वास से रूचि रखता है।

अनिल अपने अभिभावकों को पूरे सम्मान से पूर्ण–स्नेह के साथ व्यवहार करता है। घर के ,परिवार के और विद्यालय के भाई बहिन के साथ स्नेहिल व्यवहार करता है। और मित्रों के साथ भी अनिल को सभी अभिभावक/ शिक्षक प्रोत्साहन देते है। माता–पिता और अभिभावक अनिल को शारीरिक, बौद्धिक न्यूनता की तुलना अन्य बच्चों से नहीं करते है अनिल का शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य बहुत अच्छा है निरोगी है।

अनिल की बौद्धिक योग्यता ठीक है और अभिक्षमता उचित है अनिल पढाई /सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रूचि रखता ह। माता–पिता और शिक्षकों से अवगत हुआ कि बालक सरल व्यक्तित्व का धनी है।सभी के साथ मिलनसार व्यवहार है। अनिल घर–परिवार और सामाजिक बुराईयों को दूर करने का प्रयास करता है। अनिल आर्थिक तंगी दूर करने के लिए चितिंत रहता है अपने सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत करता है। अपने पास पुराने सिक्के/पुराने नोट/ स्वतंत्रता सेनानी की फोटो का संग्रह रखता है।

उपरोक्त प्रवृतियों के साथ अनिल का व्यक्तित्व सृजनात्मक प्रतीत होता है क्योंकि सृजनात्मकता वह घटना है जिससे कल्पनाशील और मूल विचार वास्तविकता में बदल जाते हैं। यह अनिल की उपलब्ध क्षमता है जो रचनात्मक लगातार और कल्पनाशील है। यह एक मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मन को समझने , व्यक्त करने, और सराहना करने की क्षमता रखता है।

सृजनशील बालक ऐसा बालक होता है जो अनुपयोगी वस्तुओं का उपयोग करते हुए उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है नवीन विचारों के प्रति जागरूकता तथा तत्काल प्रतिक्रिया देता है सृजनात्मकता के लिए औसत बुद्धि होना आवश्यक है लेकिन प्रतिभाशाली बालक सृजनशील हो, यह जरूरी नहीं है।

ऐसे बालक जो पहले से ज्ञात तथ्यों के आधार पर नए तथ्यों एवं नए विचारों का सृजन करते है उसे सृजनशील बालक कहते हैं। जेम्स ड्रेवर के अनुसारः अनिवार्य रूप से किसी नई वस्तु का सृजन करना ही सृजनात्मकता है। सृजनशील बालक नई खोज करने के प्रति उत्सुक रहते है।

तात्कालिक संदर्भ एवं परिस्थितियों से परे जाकर चितंन, मनन तथा अभिव्यक्ति की योग्यता रखने वाले बालक सृजनात्मक होते है जो बालक किसी तथ्य अथवा समस्या की सम्पूर्ण या आंशिक रूप से पुनर्व्याख्या करने की क्षमता रखते है।

विशेषताएंः–

- निर्णय करने स्वतंत्रता
- चितंन की स्वतंत्रता
- विश्वासों की साहसिक जिज्ञासा
- जिम्मेदारी की भावना
- कार्यों में लीनता
- विचारों तथा क्रियाओं की मौलिकता
- उच्चस्तरीय ध्यान तथा सतर्कता
- समस्याओं के प्रति उच्चस्तरीय संवेदनशीलता
- दूरदर्शिता की अधिकता
- समृद्ध कल्पनाशीलता
- सम्बन्धों को पहचानने और निर्णय लेने की तीव्र योग्यता, विस्तार की तीव्र योग्यता

उपरोक्त प्रवृतियों के विश्लेषण से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि बालक अनिल नायक सृजनात्मक बालक है यह केस स्टडी प्रपत्र श्री एल. एन. दुबे ,मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय , जबलपुर द्वारा निर्मित है।

इस केस स्टडी को तथ्यात्मक रूप से प्रमाणित करने के लिए दो परीक्षण और लिए गये प्रत्येक परीक्षण 60 प्रश्न बहुविकल्पीय है।

व्यक्तित्व परीक्षणः– अन्तः मुखी बर्हिमुखी के निर्माता डॉ. अशोक शर्मा एवं डॉ. श्रीमती मीनू अग्रवाल, श्री अग्रसेन स्नातकोतर शिक्षामहा विद्यालय , जयपुर के प्रकाशक विद्या भारती शोध केन्द्र सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर , परीक्षण को अनिल नायक पर प्रयोग किया। जिसमें 65 प्रतिशत प्रश्नों के उतर हां में दिये हैं और अनिश्चित उतर 6.67 जबकि नहीं में 28.33 उतर दिये है उस से साफ प्रतीत होता है कि बालक सृजनात्मक प्रवृति का है क्योंकि बालक अनिल अपनी प्रवृति के अनुकूल आचरण/व्यवहार/ विश्वास से समस्याओं को हल करता है।

इसी क्रम दूसरा परीक्षण विद्यार्थी सामाजिक व्यवहार मापनी के निर्माता डॉ. अशोक शर्मा, श्री अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय जामडोली, जयपुर, के परीक्षण को बालक अनिल पर प्रयोग किया। जिसमें सदैव उतर को 21.67 प्रतिशत चुना है अधिकतर उतर 32 प्रतिशत प्रश्नों के उतर के लिए चुना गया है और कभी–कभी उतर को 25 प्रतिशत के लिए चुना है अतः स्पष्ट तौर पर बालक सृजनात्मक बालक के रूप में है, यह तथ्य प्रमाणिक है।

सन्दर्भः–

1https://hi.quora.com

2 https://testbook.com

3 https://hi gadget.info.com

4 https://www.my coaching.in

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) चूरू

सत्र 2021–22

वैयक्तिक अध्ययन

अनुसंधान कर्ताः– DRU प्रभाग

1. श्रीमती प्रसन्ना मीणा, व्याख्याता, डाइट, चूरू।
2. श्रीमती सरोज बेनिवाल, अध्यापक, रा.बा.उ.प्रा.विद्यालय, हड़ियाल।

शीर्षक :–''विद्यार्थियों में भाषा क्षमता स्तर की वस्तु स्थिति का अध्ययन करना।''

संदर्भ :– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मेलूसर कक्षा 5 के विद्यार्थी।

प्रस्तावना :– मुझे इस संस्थान द्वारा शैक्षिक स्तर प्रोन्नति हेतु राउमावि. मेलूसर बीकान आंवटित किया गया था, उक्त विद्यालय अवलोकन के लिये द्वितीय अवसर पर गयी थी, तब विद्यालय अवलोकन करने पर अधोलिखित तथ्य स्पष्ट हुये–

- प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी कक्षा 5 के अध्ययन की उपलब्धि का दस्तावेज अवलोकन करते समय स्पष्ट हुआ की औसत से न्यून है।
- विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिकाओं का अवलोकन करने पर स्पष्ट हुआ कि भाषायी दक्षत अपेक्षित स्तर की नहीं है। विद्यार्थी अशुद्ध लेखन कर रहे है।
- साक्षात्कार वाचन करवाने पर स्पष्ट हुआ कि अशुद्धियों की मात्रा अत्यधिक है।
- संस्था प्रधान व अध्यापकों से वार्ता करने पर स्पष्ट हुआ कि कोरोना महामारी के कारण प्रत्यक्ष शिक्षण व शुद्ध वाचन पर ध्यान नही दे पाने के कारण हुआ है।
- अध्येतास्वम् अपनी त्रुटियों के प्रति सजग नहीं है।

अतः उक्त स्थिति के कारण अध्येता की वर्तमान स्थिति सुदृढ़ नहीं होगी भाषा संबंधित दक्षता का विकास नहीं हो पायेगा, तो इसका भविष्य उज्जवल नहीं हो पायेगा, अपेक्षित उपलब्धि प्राप्त नहीं होगी। अतः एवं अध्येताओं की भाषा संबंधित दक्षता सुनना, बोलना, लिखना विकसित करने की आवश्यकता है अतः उक्त कौशल विकास के लिये अन्वेषण कार्य किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :– शैक्षिक (भाषा कौशल)

अध्ययन उद्देश्य :–

1. प्रारम्भिक स्तर कक्षा 5 के विद्यार्थियों से भाषा कौशल लेखन अभाव के कारण की जानकारी प्राप्त करना।
2. विद्यार्थियों द्वारा अशुद्ध वाचन लेखन के निराकरण की कार्य योजना कियान्वित करना।
3. विद्यार्थियों द्वारा शुद्धवाचन व लेखन के लिये राह प्रस्तुत करने का प्रयास।

न्यादर्श :– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मेलूसर के कक्षा 5 के विद्यार्थी।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण व सांख्यकीय विधियां :–

अध्ययन में दस्तावेज अवलोकन, गृहकार्य, अवलोकन, वार्तालाप व वाचन लेखन अशुद्धियां, माध्य, मानक विचलन व माध्यान्तर का उपयोग किया।

अध्ययन विधा :– प्रयोगात्मक विधा द्वारा अन्वेषण कार्य करने का प्रयास किया गया है।

दत संकलन :–

अन्वेषण कर्ता द्वारा दत संकलन व व्यैक्तिक अध्ययन के लिए स्थितियां तय करने के लिए प्रथम शैक्षिक स्तर प्रोन्नति के लिए संस्था द्वारा आवंटित विद्यालय का प्रथम दृष्या अवलोकन किया गया अवलोकन के लिए अधोलिखित कार्य निस्पादित किया गया।

दस्तावेज अवलोकन :–

(क) प्रत्येक कक्षा का उपलब्धि आकलन दस्तावेज अवलोकन किया गया।
(ख) अध्येताओं की नियमितता का अवलोकन किया गया।

उक्त दोनो दस्तावेज अवलोकन से स्पष्ट हुआ की कक्षा 5 के विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर अन्य विद्यालयों से न्यून है। अधिकतर विद्यार्थी विलम्ब से आते है। अथवा अनियमित है। विद्यार्थियों के गृहकार्य अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की भाषा कौशल में लेखन अशुद्धियां अत्यधिक है।

(ग) अध्येताओं द्वारा वाचन श्रुति लेख कक्षा में दिया गया इससे स्पष्ट हुआ कि बच्चों में वाचन व लेखन संबंधि अशुद्धियां है। यह स्तर अन्य कक्षाओं की तुलना में अधिक चिन्ताजनक है।

अशुद्ध वाचन व लेखन में त्रुटियों के निराकरण प्रयास :– अध्यापकों से विचार विमर्श किया गया है। इससे स्पष्ट है कि अधोलिखित विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान आवश्यक है।

अध्येताओं की उपस्थिति पंजिका का अवलोकन नवम्बर व दिसम्बर में करने पर अधोलिखित स्थिति प्राप्त हुवी।

तालिका –1
विद्यार्थी उपस्थिति स्थिति

क्र.स.	अशुद्धि संख्या	वि.सं.
1.	26–30	07
2.	21–25	05
3.	16–20	03
4.	6–15	02
5.	6–10	02
6.	01–05	01

औसत=12

अभ्यास – विद्यार्थियो ंकी अभ्यास पुस्तिका अवलोकन करने पर नियमित अध्यापक अवलोकन, अशुद्ध लेखन (तीन पृष्ठ में लिखित अशुद्धि संख्या अस्पष्ट लेखन)

तालिका–2
गृहकार्य नियमितता

क्र.स.	उपस्थिति	गृहकार्य पूर्ण करने वाले
1.	12	5

2.	10	4
3.	8	3
4.	7	2
5.	6	1

गृहकार्य समय पर नहीं करते है।=36.59 प्रतिशत।

अशुद्ध लेखन :– अशुद्ध लेखन अधिकतम 50 शब्द व न्यूनतम 15 शब्द मिले।

तालिका – 3
(अशुद्ध लेखन)

क्र.स.	अशुद्धि संख्या	आवृति
1.	40–50	07
2.	30–40	06
3.	20–30	04
4.	10–20	02
5.	05–10	01

माध्य =22

वाचन :– प्रत्येक विद्यार्थियों से एक पृष्ठ का वाचन करवाया गया अशुद्ध शब्द वाचन की संख्या अधिकतम 40 व न्यूनतम 10 थी।

तालिका –4
(वाचन)

क्र.स.	अशुद्धि संख्या	वि.सं.
1.	35–40	07
2.	30–35	05
3.	25–30	03
4.	20–25	02
5.	15–20	02

माध्य=15.5

दत्त विश्लेषण :–

- अनियमित विद्यार्थियों की औसत संख्या 12 है यदि हम यह कहें कि 60 प्रतिशत विद्यार्थी अनुपस्थित रहते है।
- गृहकार्य – विद्यार्थियों के गृहकार्य अवलोकन करने का प्रयास किया तो स्पष्ट हुआ कि 36–59 प्रतिशत विद्यार्थी गृहकार्य करते हैं। अर्थात् लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थी गृहकार्य समय पर नहीं करते है।
- लेखन अशुद्धि – लिखित कार्य की अशुद्धियों का अवलोकन तीन पृष्ठ प्रत्येक विद्यार्थी के लिखित कार्य करने पर अधिकतम त्रुटि 50 व औसत त्रुटि 22 होती है।

- वाचन – एक पृष्ठ वाचन करने पर विद्यार्थियों द्वारा अधिकतम 40 शब्द व औसत 15–5 अर्थात 15–16 शब्द अशुद्ध वाचन किये।

निष्कर्ष :– दत्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि–

- विद्यालय की कक्षा 5 के अधिकतर विद्यार्थियों 60 प्रतिशत अनियमित है। प्रतिदिन औसतन 60 प्रतिशत विद्यार्थी अनुपस्थित रहते है।
- दत्तों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि मात्र उपस्थित छात्रों में से 36.5 प्रतिशत ही समय पर गृहकार्य करते है। लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थी गृहकार्य समय पर नहीं करते है।
- विद्यार्थियों में औसत 25 व 1–16 शब्द अशुद्ध लेखन व वाचन क्रमशः तीन पृष्ठ अवलोकन व एक पृष्ठ वाचन आधार पर कह सकते है।

अतः स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अनियमितता, अशुद्ध लेखन, वाचन, गृहकार्य अभ्यास कार्य में सुधार की आवश्यकता है।

परिणाम :– विद्यार्थियों की भाषा कौशल दक्षता का अध्ययन कर उसके कार्यो की जानकारी कर उसका निराकरण की योजना या भविष्य में सुधार की सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते है।

सुझाव :– यदि विद्यार्थियों की वाचन व लेखन क्षमता में प्रोन्नति भी जाती है। तो नियमितता व गृहकार्य स्वतः समय पर निस्पादित किया जाने लगेगा। वास्तव में अशुद्ध लेखन, अशुद्धि वाचन के कारण होता है। यदि गृहकार्य में अशुद्धता अधिक होती तो बच्चे में तनाव उत्पन्न होता है तथा वह गृहकार्य नहीं करता, इसके कारण विद्यालय में नहीं आता, उसका उपलब्धि स्तर व व्यवहार भी प्रभावित होता है। अतः अधोलिखित कार्यक्रम निर्धारित किये जाये।

- प्रत्येक विद्यार्थी प्रतिदिन एक पृष्ठ अनुलेखन कार्य करें।
- प्रत्येक विद्यार्थी एक पृष्ठ वाचन करे उसकी त्रुटियों का गणन कर उसे शुद्ध वाचन के लिऐ साथ–साथ रहे।
- कठिन शब्दों का उच्चारण प्रतिदिन प्रार्थना सभा में करवाये, उसका लेखन प्रदर्शन पट्ट पर लगाये।
- गृहकार्य में लिखित अशुद्ध प्रत्येक शब्द को 5 बार शुद्ध लिखवाये।
- प्रतिदिन एक पृष्ठ श्रुतिलेख कक्षा में बच्चों से लिखवायें उसकी त्रुटियों का सुधार करवाये।
- जैसा लिखा वैसा पठन करवायें।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) चूरू

सत्र 2021–22

वैयक्तिक अध्ययन

अनुसंधान कर्ता–P&M प्रभाग

1. अशोक कुमार पारीक, व्याख्याता, डाइट, चूरू।
2. प्रभा पारीक, व्या., रा.उ.मा.वि., मेंलूसर जिला–चूरू।

शीर्षक :– ''प्रतिभाशाली बालिका का अनवरत अध्ययन में उत्पन्न व्ययधानः–एक अध्ययन।''

बालक /बालिका का नाम :– सुमित्रा सिद्ध

आयु :– 18वर्ष

विद्यालय का नाम :– राउमावि., भानीपुरा।

पिता /अभिभावक का नाम :– श्री इमीचन्द नाथ सिद्ध

स्थाई पताः– ग्रम–बादलिया, पं.स.–भानीपुरा

कक्षा :– 12

समस्या का वर्णन :– प्रतिभाशाली बालिका का अनवरत अध्ययन में उत्पन्न व्यवधान।

समस्या की जानकारी देने वाले का नाम एवं पताः– अभिावक, गुरूजन व शोधकर्त्ता।

समस्या प्रारंभ होने का अनुमानित समयः– लगभग 1 वर्ष।

पारिवारिक विवरण :–

पिता या अभिभावक का व्यवसायः– खेती
माता का व्यवसायः– गृहिणी
पिता या अभिभावक की शिक्षाः– निरक्षर
माता की शिक्षाः– 5 वीं
पिता या अभिभावक का स्वास्थ्यः– स्वस्थ
माता का स्वास्थ्यः– स्वस्थ
पिता या अभिभावक की आयुः– 50र्ष
माता की आयु;– 40 वर्ष
परिवार की अनुमानित मासिक आय :– 500
क्या परिवार की कुल आय पर्याप्त है? नहीं
परिवार के सदस्यों की संख्याः– 7 भाई –2 बहन –2 अन्य –.2

भाई–बहनों की संख्या सही के चिन्ह से दर्शायें और संबंधित बालक/बालिका के चिन्ह को गोले से घेर दें।

क्र.सं.	1	2	3	4	5	6
बालक	रामलाल	राजूनाथ	–	–	–	–
बालिका	–	–	ममता	हीरा	–	–
आयु	25वर्ष	21वर्ष	19 वर्ष	16 वर्ष	–	–

बालक/बालिका से संबंधित परिवार के अन्य सदस्य और उनकी आयु–

1 श्रीमती सुमन,भाभी–22 वर्ष
2 श्रीमती सीता – 21 वर्ष

विद्यालयीन विवरणः–

बालक /बालिका की शैक्षिक प्रगति पिछले दो वर्षों का परिणामः–
परीक्षा वर्षः–2019–20 कक्षा –10, 449/600 =74.83 प्रतिशत।
बालक/बालिका के रूचिकर विषयः– राजनीति विज्ञान
बालक/बालिका के अरूचिकर विषयः– सभी अच्छे लगते हैं।
अरूचिकर होने का कारणः–-
बालक / बालिका द्वारा भाग लेने वाले पाठ्य सहगामी क्रियाओं के नामः–नृत्य, गायन, कबड्डी(राज्य स्तर)
बालक/बालिका से अध्यापकों से संबंधः– सभी गुरूजनों के साथ मृदु, स्नेहपूर्ण व्यवहार।
बालक/ बालिका का अपने सहपाठियों से संबंधः– अच्छे
विद्यालय का स्तर :–12 वीं तक
बालक/बालिका के अवकाश के समय मुख्य मनोरंजन के साधन क्या हैः– खेल
बालक/बालिका की भावी योजनाओं क्या हैः– बड़ा होकर सरकारी नौकरी करना चाहती है।

बालक/बालिका के अन्य व्यक्तिगत गुणों का वर्णनः–

1 कम बोलना।
2 लक्ष्यनिष्ठ।
3 आज्ञाकारिता।
4 लगन से पढ़ना व खेलना।

व्यवहार संबंधी जानकारीः–

साहसी, उदार, आज्ञाकारी, सहयोगी, भयभीत, प्रसन्नचित्त, स्थिरचित्त, अनुशासनप्रिय, आत्मविश्वासी, संवेदनशील, वास्तविकता समझने वाला।

क्या बालक/बालिका को अपने अभिभावकों ने पूर्ण स्नेह दिया है? हां
क्या बालक/बालिका से उसके भाई–बहन स्नेह करते है?– हां
क्या बालक–बालिका के मित्र उसे चाहते है?– हां
क्या विद्यालय में बालक/बालिका को सम्मान मिलता है?– हां
क्या बालक/बालिका को अभिभावकों और अध्यापकों से प्रोत्साहन मिलता है? – हां
क्या बालक/बालिका को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की सुविधा है?– हां
क्या बालक/बालिका के मन में भय जगाने के लिए दण्ड दिया जाता है?– नहीं
क्या बालक/बालिका की शारीरिक या बौद्धिक न्यूनता की तुलना उसके भाई–बहनों से की जाती है?– नहीं
क्या बालक/बालिका का स्वास्थ्य अच्छा है?– ठीक

बालक/बालिका का अपनी समस्या के प्रति दृष्टिकोणः– बालिका का विवाह 27 अप्रेल 2021 को हो गया, अतः आगे लक्ष्य प्राप्ति में कहीं ससुराल पक्ष बाधक ना बनें यही सोचना।

बालक/बालिका अपनी समस्या का मुख्य कारण क्या मानता /मानती है?– 18 वर्ष पूर्ण होते ही जल्दी विवाह कर देना।

बालक/बालिका की समस्या के प्रति अन्य व्यक्तियों का अभिमतः–

पिता का अभिमतः–मेरी पुत्री कक्षा 12 में राजकीय विद्यालय में पढ़ती है। यह बहुत होशियार है तथा हमेशा अच्छे अंक प्राप्त करती है। और यह अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहती है। लेकिन गांव में कम सुविधा होने के कारण आगे पढ़ नहीं सकती तथा इनकों ब्याह भी कर दियो। और मैं म्हारी लड़की की अच्छे भविष्य की कामना करा।

माता का अभिमतः–मेरी पुत्री कक्षा 12 में राजकीय विद्यालय में पढ़ती है। यह बहुत प्रतिभाशाली है। तथा अच्छे अंको से इसने 10 को पास किया। यह आगे पढ़ा चाहती है लेकिन गांव में सीमित सुविधा होने के कारण यह पढ़ नही सकती। और इसका विवाह भी कर दिया गया है। इसलिए आगे पढ़ने में असुविधा है। और हम अपनी पुत्री के अच्छे भविष्य की कामना करते है।

अध्यापक का अभिमतः–सुमित्रा सिद्ध कक्षा 12 की छात्रा है। गांव की परम्परा के अनुसार सुमित्रा का विवाह जल्दी कर दिया गया। यह बच्ची हमेशा से ही पढ़ाई में होशियार व बुद्धिमती रही है, परन्तु घर की विपरित परिस्थितियों के कारण बार–बार इसकी पढ़ाई बाधित हो रही है। यदि इस बालिका को शिक्षा के लिए अनुकूल माहौल मिलता तो यह बालिका उच्च पद पर आसीन होती।

अन्य संबंधित व्यक्तियों का अभिमतः– बच्ची पढ़ाई में अच्छी है व्यवहार कुशल है।

बालक/बालिका की समस्या का वर्णन एवं कारणों पर परामर्शक का अभिमतः– ससुराल वालों से बात कर पढ़ने का माहौल दिया जाए।

नामः–	सुमित्रा सिद्ध
पिता का नामः–	श्री इमीचन्द नाथ सिद्ध
माता का नाम :–	श्रीमती भंवरी देवी
पता–	ग्रम–बादलिया, पं. समिति –भानीपुरा
समस्याः–	तनाव, पढ़ाई बाधित होने की समस्या व आर्थिक।

समस्या :–

सुमित्रा सिद्ध कक्षा 12 में राउमावि, भानीपुरा की मेधावी छात्रा है। इसके पिता किसान है, माता गृहिणी है। रामलाल, राजूनाथ दो बड़े भाई व ममता एक बड़ी बहिन है। हीरा इसकी छोटी बहिन है। पांच भाई–बहिनों मं चौथे नं. की बालिका है। बालिका के माता–पिता साक्षर है। दोनों बड़े भाई शादीशुदा है। घर में लगभग दस सदस्य है। जबकी आमदनी लगभग 5000 रू. मासिक है। इस कारण पढ़ाई का आर्थिक भार परिवार उठाने में असमर्थ है। सुमित्रा ने दसवीं में 600 में से 449 अंक प्राप्त कर 74.83 प्रतिशत प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान पर रही। इसकी समस्या का अवलोकन कर उच्च शिक्षा हेतु मार्गदर्शन दिया जा सके। इसलिए इस बालिका का व्यक्तिगत अध्ययन करने के लिए तीन परीक्षण उपकरण अध्ययन करने के लिए तीन परीक्षण उपकरण के रूप में इस्तेमाल किए गए।

परीक्षण का नामः–

1. व्यक्तिगत अध्ययन प्रपत्र – एल.एन.दुबे (प्राध्यापक), मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर।
2. विद्यार्थी सामाजिक व्यवहार मापनी – डॉ. अशोक शर्मा, श्री अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर।
3. व्यक्तित्व परीक्षण (अन्तःमुखी, बर्हिमुखी)– डॉ. अशोक शर्मा व डॉ. मीनू अग्रवाल, श्री अग्रसेन शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर।

– व्यक्तित्व परीक्षण से ज्ञात हुआ कि बालिका बर्हिमुखी व्यक्तित्व की धनी है। सामाजिक व्यवहार मापनी से सिद्ध होता है कि सुमित्रा सामाजिक, मिलनसार, सहयोगी, उदारवृति, अध्ययनशील, नेतृत्व करने वाली बालिका के रूप में उभरकर सामने आती है।

व्यक्तिगत अध्ययन प्रपत्र से बालिका की पारिवारिक, सामाजिक व विद्यालय की स्थिति उभरकर सामने आती है। इस कारण गांव के सीमित संसाधनों में बालिका आगे बढ़ना चाहती है।

मूल समस्या :– 4 जुलाई 2003 में जन्मी यह बालिका अभी 18 $\frac{1}{2}$ वर्ष की हुई है। 18 वर्ष से 2 माह पहले 27 अप्रेल 2021 को आर्थिक तंगी के कारण सुमित्रा का विवाह कर दिया गया। विवाह हो जाने के कारण अनेक पारम्परिक रीति–रिवाजों के पालनार्थ सुमित्रा को अपने ससुराल जाना पड़ता है। ऐसे में भविष्य की समस्याओं से अनभिज्ञ यह बच्ची पढ़ाई पूरी करने की जद्दोजहद में तनावग्रस्त रहती है। लिए गये परीक्षणों से यह तो सिद्ध होता है कि बच्ची आत्मविश्वासी, नृत्य व खेल में रूचि रखने वाली है। माता–पिता, गुरूजनों का मत है कि यदि अच्छा माहौल मिले तो यह बच्ची सरकारी नौकरी प्राप्त कर सकती है।

परामर्श :–सुमित्रा के तनाव को कम करने व पढ़ाई अनवरत चलाने के लिए ससुराल के लोगों से मिलकर इसकी प्रतिभा से परिचित कराकर सहयोग की अपेक्षा की जा सकती है। आर्थिक समस्या पढ़ाई में बाधा न बने, इस हेतु सरकारी छात्रवृति की योजनाओं से परिचित करा लाभ दिलवाया जा सकता है।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट)
चूरू